INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMIC SOCIAL SCIENCE AND MANAGEMENT LAW
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN: 3070-0558
VOL.7, NO.1 (2026)

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा के संदर्भ में अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रो. बी. के. गुप्ता, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा माध्यम के संदर्भ में अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस शोध के लिए सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया तथा उत्तर प्रदेश राज्य के अयोध्या जनपद के 120 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन संबंधी आदत परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण के माध्यम से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही लैंगिक आधार पर की गई तुलना से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर है, जबकि अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दः- उच्च माध्यमिक स्तर एवं अध्ययन आदत।

Received: 17-12-2025 | Accepted: 24-01-2026 | Published: 31-01-2026 | www.ijeml.com

प्रस्तावना

भाषा एक औजार है, जिसका प्रयोग हम जिंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन-जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। इसके साथ-साथ भाषा हमारी सभ्यता व संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। भाषा संवाद व संप्रेषण का माध्यम है, चाहे वह बोलचाल के रूप में हो, चाहे लेखन के रूप में या फिर संकेतों में। मनुष्य की भावाभिव्यक्ति व अपने अनुभवों को बांटने के लिए भाषा ही एक सबसे अहम माध्यम है। भाषा के ज्ञान से मनुष्य की सृजनात्मक शक्ति भी बढ़ती है, उसमें मौलिकता भी आती है और वह अपने विचारों को बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। भाषा के माध्यम से व्याकरणिक स्वरूप, वाक्य रचना, वर्तनी व काव्य रचना का ज्ञान प्राप्त होता है। भाषा से विद्यार्थी दुनिया की मुख्य विशेषताओं से परिचित होकर इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, राजनीतिक पहलू, वैज्ञानिक व आधुनिक सूचना व तकनीकि से परिचित हो सकते है। अर्थात् भाषा विद्यार्थियों के अधिगम को बढ़ाने में सहायक है।

अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और आम प्रचलित प्रक्रिया है। जन्म के तुरन्त बाद से ही व्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और जीवन पर्यन्त जाने-अनजाने कुछ न कुछ सीखता रहता है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से एक व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन होते रहते हे। अनुभवों द्वारा व्यवहार में होने वाले इन परिवर्तनों को साधारण रूप में सीखने की संज्ञा दे दी है। सीखने के द्वारा हमारे व्यवहार मे जो परिवर्तन होता है, वह पूरी तरह से हमारे द्वारा अर्जित ही होता है।

यह व्यवहार जन्मजात नही होता। शिक्षा के क्षेत्र में आदतें मुख्य भूमिका निभाती है। जिन बच्चों को अध्ययन में ध्यान लगाने की आदत है उन्हें स्कूल व घर में पढते समय थकान देरी से होती है। जिन बच्चों को अध्ययन के दौरान चिन्तन, तर्क-वितर्क करने की आदत हो, वे बच्चे कम समय में व ज्यादा आसानी से अध्ययन सम्बन्धी ज्ञान अर्जन करते है। इस प्रकार अध्ययन आदतें बच्चे के शैक्षिक विकास में अहम् भूमिका निभाती है।

ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में अलग-अलग तकनीकियों का प्रयोग करता है। कुछ बच्चे एकान्त में पढना चाहते है, कुछ पुस्तकालय में, कुछ किताबों में महत्वपूर्ण बिदुओं को रेखांकित करके पढ़ते है तो कुछ अलग से नोट्स तैयार कर लेते है कुछ निरन्तर काफी समय तक बैठकर पढ़ते है तो कुछ थोडी-थोडी देर के अन्तराल से पढ़ते है। इन्हें अध्ययन आदत का नाम दिया गया है। दूसरे शब्दों में अध्ययन आदत वह है जो प्रत्येक बच्चा अपनी सीखने की क्रिया के दौरान स्वंय बनाता है। अधिगमकर्त्ता सीखने के दौरान जिन आदतन योग्यताओं को उपयोग में लाता है वे उसकी अध्ययन आदतें कहलाती हैं।

माध्यमिक शिक्षा जो कि प्रारम्भिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है जहाँ प्राथमिक शिक्षा से नींव तैयार होती है। अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर शैक्षिक संरचना में मध्य का स्तर होता है। माध्यमिक शिक्षा इस नींव को उच्च शिक्षा के लिये मजबूती प्रदान करती है। अतः किसी भी प्रकार की शिक्षा का ढाँचा हो उसमें माध्यमिक शिक्षा का विशेष स्थान है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी उस आयु स्तर के होते है जिन्हें हम

न तो छोटा कह सकते है और न ही बडे क्योंकि वो न तो पूर्ण परिपक्वता की अवस्था में होते है। इस स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में गुजरता है। इस प्रकार की अवस्था में उनके द्वारा निर्धारित किए गये लक्ष्यों व उद्धेश्यों के रास्ते से भटकने का संदेह बना रहता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में ऊर्जा बहुत होती है, जिससे वह विभिन्न गतिविधियों में लगा रहता है।

इसलिए इस स्तर पर विद्यार्थियों में उचित अध्ययन आदत होना बहुत आवश्यक है। उचित अध्ययन आदत होने से विद्यार्थी अपने सामने आने वाली कठिनाइयों जो उसे समाज में समायोजन करने के समय सामने आती है, उसका सामना करने में सक्षम बनता है। अध्ययन आदत केवल विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास ही नहीं करती है, बल्कि यह संपूर्ण समाज का विकास करता है। जिससे विद्यार्थी के वातावरण के अनुकूल होने से उसका पूर्ण विकास होते रहता है तथा उसमें अच्छी आदतें, सदाचारी आदतें वातावरणी होती जाती है। इस कारण उचित अध्ययन आदत आवश्यक है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- शर्मा, गोपेश (2022) ने कक्षा 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया। जिन सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च स्तर का था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत उच्च पाई

गई। वहीं, कक्षा 12 के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य अतिनिम्न धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। अध्ययन में यह भी ज्ञात हुआ कि सरकारी तथा गैर-सरकारी विद्यालयों के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च था, उनकी अध्ययन आदतें अनिवार्य रूप से उच्च नहीं पाई गईं। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के समायोजन एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया तथा जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च था, उनका समायोजन स्तर भी अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।

- कुमार, शैलेन्द्र एवं यादव, सरोज (2020) ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की विमाएँ–समझ तथा ई-संसाधनों के प्रयोग–में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। इसके विपरीत, अध्ययन आदतों की विमाएँ–एकाग्रता, योजना, अंतर्क्रिया, अध्ययन से संबंधित वातावरण एवं अभ्यास–के संदर्भ में विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों के विद्यार्थियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- खान, दौलत (2020) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्य, अध्ययन आदतों तथा आकांक्षा स्तर का विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह

स्पष्ट हुआ कि राजस्थान जैसे क्षेत्रफल की दृष्टि से विशाल राज्य में स्थित मरु, मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्यों, अध्ययन आदतों एवं आकांक्षा स्तरों में समग्र रूप से उल्लेखनीय तुलनात्मक अंतर परिलक्षित हुआ। अधिकांश विद्यार्थियों का व्यक्तित्व सामान्य स्तर का, व्यक्तिगत मूल्य उच्च स्तर के, अध्ययन आदतें सामान्य स्तर की तथा आकांक्षा स्तर भी सामान्य पाया गया। व्यक्तित्व के आधार पर मरु एवं पहाड़ी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में कोई अंतर नहीं पाया गया, जबकि व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में मरु, मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के मध्य स्पष्ट अंतर पाया गया।

- खटकर, हेमन्त कुमार (2020) ने किशोरियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन व्यक्तित्व प्रकार के परिप्रेक्ष्य में किया। इस अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य की शासकीय एवं अशासकीय शालाओं की 120 किशोरियों का चयन किया गया, जिसमें व्यक्तित्व प्रकार को स्वतंत्र चर तथा अध्ययन आदतों को आश्रित चर के रूप में लिया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि उभयमुखी व्यक्तित्व वाली किशोरियों का प्रतिशत सर्वाधिक (45%) था, इसके पश्चात् बहिर्मुखी (31.87%) एवं अंतर्मुखी (23.33%) किशोरियाँ पाई गईं। निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि अंतर्मुखी एवं उभयमुखी किशोरियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें अंतर्मुखी किशोरियों की अध्ययन आदतें बेहतर रहीं। इसी प्रकार अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी किशोरियों तथा उभयमुखी एवं बहिर्मुखी किशोरियों की अध्ययन आदतों में भी सार्थक अंतर पाया गया,

जहाँ अंतर्मुखी एवं उभयमुखी किशोरियों की अध्ययन आदतें बहिर्मुखी किशोरियों की अपेक्षा अधिक प्रभावी पाई गईं।

पूर्व में हुए साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि वैसे तो अध्ययन आदतों पर बहुत कार्य हो चुके हैं, परन्तु शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में अध्ययन नगण्य हैं। इस अध्ययन के माध्यम से शोधकर्ता यह जानने का प्रयास कर रहा है कि क्या विद्यार्थियों की भाषा के संदर्भ में उनकी अध्ययन आदतों में कोई अंतर पाया जाता है या नहीं। अतः शोध के माध्यम से इसी जिज्ञासा समाधान हेतु इस विषय का चयन किया गया है।

उद्देश्य

1 उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 उच्च माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1 उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMIC SOCIAL SCIENCE AND MANAGEMENT LAW
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN: 3070-0558
VOL.7, NO.1 (2026)

2 उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

3 उच्च माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि - इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श - इस शोध कार्य में न्यादर्श के लिए उत्तरप्रदेश राज्य के अयोध्या जनपद के 120 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण - इस शोध कार्य में आंकडों का संकलन करने के लिए एम. मुखोपाध्याय व डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन संबंधी आदत परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि - आंकडों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण के द्वारा किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 - उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या: 1

उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	परिणाम
हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी	60	241.78	17.38	1.98	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
अग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी	60	247.89	16.49		

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का माध्य मान 241.78 तथा मानक विचलन 17.38 है। दूसरी ओर उच्च अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का माध्य मान 247.89 तथा मानक विचलन 16.49 है। प्राप्त माध्यों में अंतर की गणना टी परीक्षण द्वारा की गयी। इससे टी परीक्षण का मान 1.98 प्राप्त हुआ। टी परीक्षण का परिकलित मान तालिका के मान से अधिक है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना - 2 उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या: 2

उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	परिणाम
हिन्दी माध्यम के छात्र	30	237.93	17.56	2.22	0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत
हिन्दी माध्यम की छात्राएं	30	246.86	13.24		

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के छात्रों की अध्ययन आदतों का माध्य मान 237.93 तथा मानक विचलन 17.56 है। दूसरी ओर हिन्दी माध्यम की छात्राओं का माध्य मान 246.86 तथा मानक विचलन 13.24 है। प्राप्त माध्यों में अंतर की गणना टी परीक्षण द्वारा की गयी। इससे टी परीक्षण का मान

2.22 प्राप्त हुआ। टी परीक्षण का परिकलित मान तालिका के मान से अधिक है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना - 3 उच्च माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या: 3

उच्च माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में अंतर

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	परिणाम
अंग्रेजी माध्यम के छात्र	30	242.30	20.13	0.50	0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
अंग्रेजी माध्यम की छात्राएं	30	245.09	23.32		

व्याख्या और विश्लेषण

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर से संबंधित सांख्यिकीय परिणाम दर्शाती है।

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की अध्ययन आदतों का माध्य मान 242.30 तथा मानक विचलन 20.13 है। दूसरी ओर अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं का माध्य मान 245.09 तथा मानक विचलन 23.32 है। प्राप्त माध्यों में अंतर की गणना टी परीक्षण द्वारा की गयी। इससे टी परीक्षण का मान 0.50 प्राप्त हुआ। टी परीक्षण का परिकलित मान तालिका के मान से कम है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

समग्र निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक विश्लेषण माध्यम (हिन्दी एवं अंग्रेजी) तथा लिंग (छात्र एवं छात्राएँ) के आधार पर किया गया। प्राप्त सांख्यिकीय परिणामों के समग्र अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यम के आधार पर हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का माध्य मान हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अपेक्षाकृत अधिक विकसित हैं।

लिंग के आधार पर विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि हिन्दी माध्यम में छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर विद्यमान है, जहाँ छात्राओं

की अध्ययन आदतें छात्रों की तुलना में अधिक प्रभावी पाई गईं। इसके विपरीत, अंग्रेजी माध्यम में छात्रों एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अंग्रेजी माध्यम में दोनों वर्गों की अध्ययन आदतें लगभग समान स्तर की हैं।

अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन आदतों पर माध्यम का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जबकि लिंग का प्रभाव माध्यम के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देता है। यह अध्ययन शिक्षकों एवं शैक्षिक योजनाकारों के लिए उपयोगी है, जिससे वे विभिन्न माध्यमों एवं लिंग समूहों की आवश्यकताओं के अनुरूप अध्ययन आदतों के विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक रणनीतियाँ विकसित कर सकें।

निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर माध्यम एवं लिंग दोनों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन के निहितार्थ शैक्षिक क्षेत्र के विभिन्न पक्षों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। सर्वप्रथम, यह अध्ययन शिक्षकों को यह समझने में सहायता प्रदान करता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों के विकास हेतु विशेष मार्गदर्शन एवं प्रेरणा की आवश्यकता है, जबकि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत विकसित अध्ययन आदतों को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है। द्वितीयतः, हिन्दी माध्यम में छात्राओं की बेहतर अध्ययन आदतें यह संकेत देती हैं कि

छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि एवं अनुशासन विकसित करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। साथ ही, अंग्रेजी माध्यम में लिंग आधारित अंतर का अभाव यह दर्शाता है कि समान शैक्षिक अवसर एवं संसाधन दोनों वर्गों के लिए समान रूप से प्रभावी हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन शैक्षिक योजनाकारों एवं पाठ्यक्रम निर्माताओं को विभिन्न माध्यमों एवं लिंग समूहों के अनुसार उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ, अध्ययन कौशल कार्यक्रम तथा प्रेरणात्मक गतिविधियाँ विकसित करने हेतु दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार यह शोध अध्ययन आदतों के उन्नयन हेतु व्यावहारिक एवं नीतिगत स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सुझाव

- विद्यार्थियों को निश्चित समयबद्ध योजना बनाकर पढ़ाई करनी चाहिए।
- अध्ययन एक निश्चित शांत एवं उपयुक्त रोशनी वाले स्थान पर करना चाहिए।
- एक समय में एक विषय को एकाग्रचित होकर पढ़ना चाहिये साथ ही महत्वपूर्ण बिन्दुओं को अध्ययन के साथ ही साथ उतार देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को हमेशा लिख कर पढ़ने की आदत डालनी चाहिये। साथ ही अध्ययन के लिये विद्यार्थियों को समय का प्रबंधन करना आवश्यक है।
- विद्यार्थी अपने उज्ज्वल भविष्य के लिये सदैव सजग एवं तत्पर रहें एवं अपनी अध्ययन आदत को नियमित रखे।

- विद्यार्थियों को पुस्तकालय में नियमित अध्ययन की आदत डालनी चाहिए एवं सदैव पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने की आदत डालनी चाहिए।
- विद्यार्थियों को पढ़ते समय मोबाइल फोन का कम से कम उपयोग करना चाहिए।

संदर्भ

- कपिल, एच.के. (2006). अनुसंधान विधियां. एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
- त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., (2006). शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू, (1997). रिसर्च इन एज्यूकेशन. प्रिटिंग हॉल प्रा. लि., नई दिल्ली।
- भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ, (1977). अनुसंधान परिचय. एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
- भटनागर, आर. पी. तथा मीनाक्षी, (2007). शिक्षा अनुसंधान. लायल बुक डिपो, मेरठ।
- पाठक, पी.डी, (2007). शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- शर्मा, आर. ए., (2009). शिक्षा अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

- शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदि, शिखा (2013). शिक्षा मनोविज्ञान के दार्शनिक आधार. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा, डी.एल., (2005). शिक्षा तथा भारतीय समाज. सूर्या पब्लिकेशनल, मेरठ।
- श्रीवास्तव डी.एस. एवं प्रीति (2014). शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।